

दगादा ॥ तपसि च उदसं सदा सुमिणा एादवा ॥
 पुष्पि द्या उरा लाण ॥ कमन्न कक्षाणा फल विवि वि
 साम त विस्म ॥ ११ ॥ तपाण
 रकाणा ढगा ॥ सिद्ध च स्मर व
 त्रिपय मठं सुचा नि स म्म द्वा
 हय दि द्वा ॥ त सु मिणा उ गि द्वा ति श्वा ॥ ईदं अ पुं प
 वि सं ति श्वा ॥ अन्न मन्नां स वि सं ला वि ति श्वा ॥ तप



त सु वि ण ल
 ति द्वा स्म ॥ अं
 द्वा द्वा व

